डा. एस. अय्यप्पन
सचिव एवं महानिदेशक
Dr. S. AYYAPPAN
SECRETARY & DIRECTOR GENERAL

भारत सरकार
कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली 110 114

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH & EDUCATION
AND
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
MINISTRY OF AGRICULTURE, KRISHI BHAVAN, NEW DELHI 110 114
Tel.: 23382629; 23386711 Fax: 91-11-23384773
E-mail: dg.icar@nic.in

अपील

हिन्दी भारत की अधिकतम जनसंख्या की मातृभाषा ही नहीं अपितु राष्ट्रभाषा और राजभाषा भी है। भारत के सम्पूर्ण संघीय शासन की भाषा के रूप में इसे संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त है। हिन्दी को 14 सितम्बर, 1949 को राजभाषा घोषित किया गया था। इसीलिए संघ सरकार के सभी कार्यालयों में यह दिवस हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा का ज्ञान प्रत्येक भारतीय को होना चाहिए। देश के विविध भाषा–भाषी लोगों के बीच यह भाषा सम्पर्क भाषा का भी काम कर रही है, जिससे राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता को बल मिलता है।

दुनिया में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी तीसरे स्थान पर है। किसी भी भाषा का विकास उसके वास्तविक प्रयोग पर निर्भर है। यदि विभिन्न प्रकार के विचार विभिन्न स्तर पर किसी भाषा में व्यक्त किएं जाएं तो उन विचारों को व्यक्त करने के लिए उस भाषा में समय–समय पर अनेक नए शब्द आते रहते हैं, अभिव्यक्ति की नई शैलियां विकसित होती हैं और इस प्रकार उस भाषा का रूप निरंतर संवरता जाता है। विचारों की अभिव्यक्ति मौखिक विचारों तक ही सीमित नहीं रहती, जब उन विचारों को लिपिबद्ध किया जाता है तो उस भाषा में विभिन्न प्रकार के निबंध लिखे जाते हैं, पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, शब्दकोश बनते हैं तथा ग्रन्थों का निर्माण होता है। जितनी मात्रा में इस प्रकार का साहित्य तैयार होता है, उतनी ही गति से उस भाषा का प्रसार होता है और वह भाषा दिन दुगुनी रात चौगुनी समृद्ध होती जाती है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि परिषद में हिन्दी का प्रयोग प्रशासनिक काम–काज से आरंभ हुआ परन्तु आज उसका प्रयोग क्षेत्र काफी बढ़ गया है। मुझे इस बात की बहुत

.....2/–

प्रसन्नता है कि परिषद व इसके संस्थानों में राजभाषा हिन्दी में कार्य उत्साहपूर्वक किया जा रहा है। परिषद तंत्र के अधिकारी न केवल राजभाषा विभाग की विभिन्न पुरस्कार योजनाओं के अन्तर्गत लगातार पुरस्कार प्राप्त कर रहे हैं, बल्कि वैज्ञानिक भी विभिन्न वैज्ञानिक संगोष्ठियों में अपने शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण हिन्दी में कर रहे हैं। परिषद से प्रकाशित की जाने वाली शोध पत्रिका 'कृषिका' में भी हमें विभिन्न संस्थानों से उत्कृष्ट कोटि के शोध पत्र प्राप्त हो रहे हैं। वैज्ञानिकों की अनुसंधान खोजों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए लोकप्रिय विज्ञान लेखन को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे यह बहुत ही स्पष्ट है कि हिन्दी सभी प्रकार के भावों और विचारों को प्रकट करने के लिए एक सशक्त माध्यम है।

राजभाषा के काम को आगे बढ़ाने में हम सभी का योगदान आवश्यक है। समेकित प्रयासों से ही हिन्दी के साथ–साथ सभी भारतीय भाषाओं की उन्नति होगी। आज इस अवसर पर मैं आप सबसे अपील करता हूं कि हमारे इस प्रयास में आप सब बराबर के भागीदार बनें।

मैं परिषद व इसके संस्थानों के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों/वैज्ञानिकों को हिन्दी दिवस की हार्दिक बधाई देते हुए इस अवसर पर आयोजित किए जाने वाले समारोहों की सफलता की कामना करता हूं।

एस. अय्यप्पन

दिनांकः– 08.09.2015

(एस. अय्यप्पन)